



बढ़ते कदम

वर्ष-16
अंक-02
2017-18

पूर्व रेलवे, मालदा मंडल की सृजनात्मक हिन्दी ई-मासिकी

आम नगरी मालदा के आम

भारत के संविधान में राजभाषा

राजभाषा नियम, 1976
(यथासंशोधित, 1987, 2007 तथा 2011)

(2) केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से--

(क) क्षेत्र 'ख' में किसी राज्य या संघ राज्यक्षेत्र को या ऐसे राज्य या संघ राज्य क्षेत्र में किसी कार्यालय (जो केन्द्रीय सरकार का कार्यालय न हो) को पत्रादि सामान्यतया हिन्दी में होंगे और यदि इनमें से किसी को कोई पत्रादि अंग्रेजी में भेजे जाते हैं तो उनके साथ उनका हिन्दी अनुवाद भी भेजा जाएगा: परन्तु यदि कोई ऐसा राज्य या संघ राज्य क्षेत्र यह चाहता है कि किसी विशिष्ट वर्ग या प्रवर्ग के पत्रादि या उसके किसी कार्यालय के लिए आशयित पत्रादि संबद्ध राज्य या संघ राज्यक्षेत्र की सरकार द्वारा विनिर्दिष्ट अवधि तक अंग्रेजी या हिन्दी में भेजे जाएं और उसके साथ दूसरी भाषा में उसका अनुवाद भी भेजा जाए तो ऐसे पत्रादि उसी रीति से भेजे जाएंगे ;

(ख) क्षेत्र 'ख' के किसी राज्य या संघ राज्य क्षेत्र में किसी व्यक्ति को पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी में भेजे जा सकते हैं ।

(3) केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से क्षेत्र 'ग' में किसी राज्य या संघ राज्यक्षेत्र को या ऐसे राज्य में किसी कार्यालय (जो केन्द्रीय सरकार का कार्यालय न हो) या व्यक्ति को पत्रादि अंग्रेजी में होंगे ।

(4) उप नियम (1) और (2) में किसी बात के होते हुए भी, क्षेत्र 'ग' में केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से क्षेत्र 'क' या 'ख' में किसी राज्य या संघ राज्यक्षेत्र को या ऐसे राज्य में किसी कार्यालय (जो केन्द्रीय सरकार का कार्यालय न हो) या व्यक्ति को पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी में हो सकते हैं । परन्तु हिन्दी में पत्रादि ऐसे अनुपात में होंगे जो केन्द्रीय सरकार ऐसे कार्यालयों में हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की संख्या, हिन्दी में पत्रादि भेजने की सुविधाओं और उससे आनुषंगिक बातों को ध्यान में रखते हुए समय-समय पर अवधारित करे ।

विषय वस्तु

प्रसंगवश—

— सुधांशु कुमार विश्वास —	3
... मुस्कुराना सीखें —	
— इंद्र ज्योति राय	4
कानन देवी	
— प्रियंका पाण्डे	6
भारत के बागीचे—	
— रितेश कुमार	7
दुश्मन का ...—	
— चंद्रभान	9
गौरैया का परिवार	
— कैलाश चंद्र धारिया	11
मोबाइल के ... —	
— कुमारी ऋचा	13
बिना पूंजी का धंधा	
— सच्चिदानंद	14
मां मेरी मां	
— विजय कुमार	17
मेरे पिता—	
— विनय कुमार झा	17
दो कविताएं	
— राहुल कुमार	18
चित्र विथिका	19-20

प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। इससे संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

संपर्क सूत्र

संपादक, बढ़ते कदम
मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय
पूर्व रेलवे/मालदा
फोन- 72190/ 72192 (रेलवे)
Email – rajbhasha.malda@gmail.com

आम नगरी - मालदा

भारत में, पहाड़ी क्षेत्रों को छोड़ कर आम लगभग सभी स्थानों पर पैदा होता है। हमारे यहाँ आम की सैकड़ों किस्में हैं। यह आकार और रंगों में अलग-अलग होते हैं। आम को अनंत समय से भारत में उगाया जाता रहा है। विश्व के अनेक देशों में आम की अलग-अलग जाति होती है। फिर भी हिंदुस्तान का प्रसिद्ध फल आम ही है।

आँकड़ों के मुताबिक इस समय भारत में प्रतिवर्ष एक करोड़ टन आम पैदा होता है जो दुनिया के कुल उत्पादन का 52 फ्रीसदी है। स्वाद, स्वास्थ्य एवं बल संवर्धन की दृष्टि से आम सभी फलों में आगे है। आम भारत के लोकगीतों और धार्मिक अनुष्ठानों से अनिवार्य रूप से जुड़ा है। कवि कालिदास ने इसकी प्रशंसा में गीत लिखे हैं।

आम कमजोरी दूर भगाता है। आम में सभी फलों से अधिक विटामिन ए होता है। इसके अतिरिक्त विटामिन 'बी' भी अधिक होते हैं। इसमें 'आयरन' भी बेहद तादाद में पाया जाता है, इसमें विटामिन 'सी' और 'ई' भरपूर तादाद में पाया जाता है। जो आँखों के लिए बेहद फ़ायदेमंद होते हैं। वैसे तो मालदा आम की मिठास का स्वाद लोग मई की शुरुआत से ही लेने लगते हैं।

भले ही ऐलफैंसों को आम का राजा कहा जाता हो लेकिन मालदा आम को ही आम का राजा माना जाना चाहिए। ग्राहकों को आम की पहचान करके ही आम खरीदना चाहिए। इस बार मालदा में आम का रिकार्ड तोड़ उत्पादन होने की संभावना थी परंतु ऐसा शायद नहीं हो पाया है। बाहर के आम मालदा के आम का मुकाबला नहीं कर सकते हैं। मालदा के आम के बगीचे में दूर-दूर से लोग मई और जून के महीने में आम खरीदने पहुंचते हैं।

मालदा आम की ख़ासियत यहां की मिट्टी की वजह से और ज़्यादा बढ़ जाती है। यहां की सौंधी और उपजाऊ मिट्टी मालदा आम की मिठास और खुशबू में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

सदियों से आम की पैदावार मालदा में होती आ रही है। कृष्ण भोग, गोपाल भोग, मोहन भोग, राखालभोग, आम्रपाली, फुनिया, मल्लिका नामक आम प्रायः सब जगह पाए जाते हैं। मालदा आम की गुठली पतली होती है। इसका छिलका भी अन्य आमों की अपेक्षा बहुत पतला होता है। — सुधांशु कुमार विश्वास

निःशुल्क वितरण हेतु

संरक्षक	परामर्श	प्रधान संपादक	संपादक	कार्यकारी संपादक	सहयोग
मोहित सिन्हा मंडल रेल प्रबंधक	विजय कुमार साहू अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक	सुधांशु कुमार विश्वास राजभाषा अधिकारी(प्रा.)	सच्चिदानंद व. अनुवादक	कैलाश चंद्र धारिया व. अनुवादक	इंद्र ज्योति राय क. अनुवादक

मुस्कराइए मगर दिल से

एक बार किसी ने पूछा कि व्यक्ति के जीवन में कौन-कौन से सुख होने चाहिए तो उस व्यक्ति ने इस प्रश्न का उत्तर कुछ यूँ दिया—पहला सुख निरोगी काया, दूजा सुख पास हो माया, तीजा सुख सुलक्षणा नारी, चौथा सुख हो आज्ञाकारी बेटा, सुख पाँचवां तो वे ही पाते, हंसते-हंसते जो उम्र बिताते। हालांकि उपरोक्त पद्यांश में चार सुख तो किसी कवि ने पहले ही गिना दिये थे, लेकिन उस व्यक्ति ने उन चारों सुखों में हंसने के सुख को जोड़ उपरोक्त वर्णित सभी सुखों के बीच एक पाँचवें सुख का जो खालीपन था उसे पूरा कर दिया।

पद्यांश में पाँचवा सुख जोड़ने पर वह अपना मूल रूप नहीं खो पाया। पाँचवें, सुख अर्थात् 'हंसने' और 'मुस्कराने' को विशेष महत्व दिया गया है। आप सारी जिंदगी यदि मुस्कराते रहे तो आपका जीवन सफल है। रोते झिंकते जीवन बिताने वाला जीवन जीना भी कोई जीना है। प्रकृतिगत वास्तविकता है कि मनुष्य का जन्म रोते हुए होता है। उसके जीवन का अंत शांत एवं शिथिलता के साथ होता है।



संभवतः मनुष्य ही ऐसा प्राणी है जिसकी उत्पत्ति रोते हुए होती है। अगर थोड़ा दार्शनिक होते हुए इस रहस्य को जानने का प्रयास किया जाए, तो इसका अर्थ निकलेगा, जिस संसार में तूने जन्म लिया है, वहाँ रोना, झिंकना, क्लेश, दुख और तनाव इत्यादि आते रहेंगे। मृत्यु के शांत एवं स्थिर हल्के मुस्कराहट भाव से गंभीर अर्थ निकलता है, फिर भी आपको घबराना नहीं है आपको जीना है, सभी प्रकार के तनावों एवं क्लेश और दुखों के बीच आपको शांत एवं स्थिरता से मुस्कराते हुए इनका मुकाबला करना है। यहाँ आपकी मुस्कराहट ही आपका सबसे बड़ा हथियार बनेगी। जीवन और मृत्यु के इस रहस्य को जानकर ही आप अपने जीवन को सफल बना सकते हैं।

रोते हुए जन्म हुआ है तो क्या हुआ जीवन तो हंसते हुए बिताना चाहिए। फिल्म मुकद्दर का सिकंदर के एक गीत की कुछ पंक्तियाँ —

**रोते हुए आते हैं सब, हंसता हुआ जो जाएगा,
वो मुकद्दर का सिकंदर, जानेमन कहलाएगा।**

जिसने हंसते हुए जिंदगी जी वह सही अर्थों में भाग्य का धनी है। हंसना और मुस्कराना हमारे जीवन का अहम पहलू है। जिस दिन आपने हृदय से हंसना सीख लिया उसी दिन आपने सफल बनने की कला सीख ली। मुस्कान हमें बजार से खरीदनी नहीं पड़ती। जब इसका मोल ही नहीं तो फिर कैसी कंजूसी। हृदय से हंसे-मुस्कराएं न केवल शारीरिक रूप से अपितु मानसिक रूप से भी आप स्वस्थ बनेंगे। शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रहने पर ही आप अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं, थके हुए नीरस शरीर के साथ नहीं। मुस्कान का विस्तारित रूप मुस्कान के महत्व को रेखांकित करता है। मुस्कान के इस विस्तारित रूप के अनुसार एक बार मुस्कराने से स्वयं को स्वतंत्र बनाते हैं। अपने को विशेष बनाते हैं। इससे आपका महत्व बढ़ता है। इससे आपकी भावनाएँ उच्चतम स्तर पर पहुँचती हैं। मुस्कराने से आपका तनाव दूर होता है।

यदि आप अपनी दुकान चलाते हैं तो आपका मुस्कराता चेहरा आपके ग्राहकों पर जादूका-सा असर डालेगा। यह सहज की ग्राहकों को आपकी ओर आकर्षित करेगा। कुछ ग्राहक कुछ भी लेने में रुचि न दिखाएं तो भी आपके चेहरे पर आने वाली हल्की-सी मुस्कान उन्हें पुनः आने का आमंत्रण देगी और वह फिर कभी आपकी दुकान पर अवश्य ही आएगा। यदि सफल दुकानदार बनना चाहते हैं तो आपको हृदय से मुस्कारना होगा। झूठी और फीकी हंसी कभी भी मुस्कान नहीं बन सकती। वह एक प्रकार की खिसियाहट या झेंप बनती है। खिसियाट और झेंप आपको सफलता नहीं दिला सकती। मुस्कराइए मगर दिल से। वास्तविक हंसी-हंसे कृत्रिम या बनावटी हंसी न हंसे। कृत्रिमता या बनावटीपन कभी भी वास्तविकता के समीप नहीं हो सकते। वास्तविकता में सादगी और सहजता होती है, बनावटीपन में छल और प्रपंच। इसलिए सदैव वास्तविक हंसी हंसे।

नौकरी पेशा होने पर आप मुस्कान से ही उन्नति प्राप्त कर सकते हैं। आप अपने सहकर्मियों एवं वरिष्ठ के समक्ष कार्य के दौरान सदैव अपने चेहरे पर हल्की-सी मुस्कराहट लाएं। फिर देखें आपके समक्ष उपस्थिति व्यक्ति पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है। फिर वह चाहे आपका सहकर्मी हो या वरिष्ठ सभी आपसे प्रभावित होंगे। उनके और आपके बीच स्नेह एवं लगाव पनपेगा जो आपको उन्नति दिलाने में सहायक बनेगा।

सफल दाम्पत्य जीवन के लिए भी यदि पति-पत्नी अपनी समस्याओं के बीच एक दूसरे के समक्ष सदैव हल्की सी मुस्कराहट बिखेरते रहें तो दाम्पत्य जीवन में तनाव एवं कलह उत्पन्न ही नहीं हो सकते। पति के झल्लाने पर पत्नी प्यार से हल्के से मुस्कराहट के साथ उसका प्रतियुत्तर दे तो पति की झल्लाहट मिनट में छू मंतर हो जाएगी। तनाव एवं कलह तभी उत्पन्न होते हैं, जब झल्लाहट या क्रोध का प्रत्युत्तर झल्लाहट या क्रोध के साथ ही दिया जाता है। अगर कोई इस छोटी-सी बात को पल्लू में बांध लें तो पारिवारिक कलह खत्म हो जाय।

मुस्कान से आप न केवल स्वयं को आनंदित करते हैं अपितु आस-पास का माहौल भी आनंदित होता है। इससे कार्य-स्थल पर तनाव समाप्त हो जाता है। न केवल आपकी अपितु आपके सहकर्मियों की भी कार्यक्षमता बढ़ती है। मुस्कान एक औषधि है जो आपके साथ अन्य लोगों को भी खुशहाल बनाती है।

यह एक विडंबना ही है कि वर्तमान युग में मनुष्य को सब तरह साधन सुलभ हो गए हैं बावजूद इसके उसके पास हंसने एवं मुस्कराने के लिए फुर्सत नहीं है। न जाने क्यों लोग इतने नीरस होते जा रहे हैं। यदि जीवन में स्फूर्ति लाना चाहते हो, तो हृदय से हंसना-मुस्कराना सीखो तो जीवन सफल हो जाएगा।

मुस्कान से आप आनंदित होते हो। आनंदित और खुश व्यक्ति ही जीवन में सफल हो सकता है। मनुष्य की सफलता में उसके शारीरिक गतिविधियों की अपेक्षा उसके मस्तिष्क का सर्वाधिक योगदान होता है। आपका मस्तिष्क स्थिर है तो आप लक्ष्य के प्रति समर्पित होंगे। आपका मस्तिष्क आपके शरीर को सफलता की दिशा में प्रयास करने के लिए संदेश देगा। आपका शरीर उसमें कार्य करेगा। कहने का तात्पर्य है कि आपकी बुद्धि आपके तन की स्वामी है। बुद्धि को स्थिर करके तनाव मुक्त करना होगा। तनाव मुक्ति के लिए मुस्कराना होगा। आप जितना हृदय से मुस्कराएंगे उतना ही आप तनावमुक्त होंगे।

स्थिर बुद्धि ही लक्ष्य प्राप्ति की ओर प्रेरित करेगी। इस दृष्टि से सफलता और मुस्कान के बीच गहरा रिश्ता है। तो आज से ही हंसते मुस्कारते हुए जीवन जीना प्रारंभ कीजिए। चिंता छोड़ो, तनाव छोड़ो और मुस्कराकर जीवन जीना सीखो। किसी शायर ने कहा है, 'जिंदगी जिंदादिली का नाम है, मुर्दा दिल क्या खाक जिया करते हैं।' जिंदगी को जिंदादिली के साथ मुस्कराकर जीयो।

कानन देवी

भारतीय सिनेमा जगत में कानन देवी का नाम एक ऐसी शख्सियत के तौर पर याद किया जाता है, जिन्होंने न केवल फिल्म निर्माण की विधा बल्कि अभिनय और पार्श्वगायन से भी दर्शकों के बीच अपनी खास पहचान बनाई थी। ये भारत की प्रसिद्ध अभिनेत्री, गायिका और फिल्म निर्माता थीं। इनका मूल नाम कानन बाला था। बगैर प्रशिक्षण हासिल किए कानन ने गायन की दुनिया में प्रवेश किया और अभिनय के क्षेत्र में भी अपनी पहचान बनाई।

कानन देवी का जन्म हावड़ा में 1916 को एक मध्यम वर्गीय बंगाली परिवार में हुआ था। बाल्यावस्था के दिनों में ही उनके दत्तक पिता रमेश चन्द्र दास की मृत्यु हो गई थी। इसके बाद परिवार की आर्थिक जिम्मेदारी को देखते हुए कानन देवी अपनी माँ के साथ काम में हाथ बंटाने लगीं। कानन देवी जब सिर्फ 10 वर्ष की ही थीं, तब अपने एक पारिवारिक मित्र की मदद से ज्योति स्टूडियो द्वारा निर्मित फिल्म 'जयदेव' में काम करने का अवसर पाई।

इसके बाद कानन देवी को ज्योतिस बनर्जी के निर्देशन में राधा फिल्मस के बैनर तले बनी कई फिल्मों में बतौर बाल कलाकार काम करने का मौका मिला। वर्ष 1934 में प्रदर्शित फिल्म 'माँ' बतौर अभिनेत्री कानन देवी के सिने कैरियर की पहली हिट फिल्म साबित हुई। कुछ समय के बाद कानन देवी न्यू थियेटर में शामिल हो गईं।



इस बीच उनकी मुलाकात रायचंद बोराल से हुई, इन्होंने कानन देवी से हिन्दी फिल्म में काम करने का प्रस्ताव रखा। तीस और चालीस के दशक में फिल्म अभिनेता या अभिनेत्रियों को फिल्म में अभिनय के साथ ही पार्श्वगायक की भूमिका भी निभानी पड़ती थी। इस स्थिति को ध्यान में रखते हुए कानन देवी ने भी संगीत की शिक्षा लेनी शुरू कर दी।

उन्होंने संगीत की प्रारंभिक शिक्षा उस्ताद अल्लारक्खा और भीष्मदेव चटर्जी से प्राप्त की। इसके बाद उन्होंने अनादि दस्तीदार से रवीन्द्र संगीत भी सीखा। वर्ष 1937 में प्रदर्शित फिल्म 'मुक्ति' बतौर अभिनेत्री कानन देवी के सिने कैरियर की सुपर हिट फिल्म साबित हुई। पी.सी.बरुआ के निर्देशन में बनी इस फिल्म की जबरदस्त कामयाबी के बाद कानन देवी न्यू थियेटर की चोटी की कलाकारों में गिनी जाने लगी थीं।

सन 1941 में कानन देवी ने न्यू थियेटर छोड़ दिया और अब वे स्वतंत्र तौर पर काम करने लगीं। 1942 में प्रदर्शित फिल्म 'जवाब' बतौर अभिनेत्री कानन देवी के सिने करियर की सर्वाधिक हिट फिल्म साबित हुई। इस फिल्म में उन पर फिल्मया गया यह गीत- "दुनिया है तूफान मेल", उन दिनों श्रोताओं के बीच काफी लोकप्रिय हुआ। इसके बाद कानन देवी की 'हॉस्पिटल', 'वनफूल' और 'राजलक्ष्मी' जैसी फिल्म भी प्रदर्शित हुई, जो टिकट खिड़की पर सुपरहिट रहीं।

अपनी इस सफलताओं के बाद कानन देवी ने सन 1948 में फिल्म नगरी बंबई का रुख किया। इसी वर्ष प्रदर्शित फिल्म 'चंद्रशेखर' में एक अभिनेत्री के रूप में कानन देवी ने अंतिम बार अभिनेत्री के रूप में काम किया था। फिल्म में उनके नायक की भूमिका अशोक कुमार ने निभाई थी।

वर्ष 1949 में कानन देवी ने फिल्म निर्माण के क्षेत्र में 'श्रीमती पिक्चर्स' के नाम से कदम रखा। वर्ष 1976 में फिल्म निर्माण के क्षेत्र में कानन देवी के उल्लेखनीय योगदान को देखते हुए उन्हें फिल्म जगत के सर्वोच्च सम्मान 'दादा साहब फाल्के पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। किंतु 17 जुलाई, 1992 को इस दुनिया को अलविदा कह गईं।

— प्रियंका पाण्डे

भारत के बागीचे

हरियाली से मनुष्य का सदियों पुराना नाता है। हरे भरे वृक्ष और उन वृक्षों पर कलरव करते पक्षी मन को मोहित कर देते हैं। सुंदर हरी हरी घास पर दौड़ती गिलहरियां और रंग बिरंगे फूलों से सजी फूलों की क्यारियां भला किसे अच्छी नहीं लगती। इन सारी खूबियों को आप किसी बागीचे में देख सकते हैं। हमारे देश में बागों की कमी नहीं है। भारत में एक से बढ़कर एक बागीचे हैं जो सालों भर पर्यटकों और प्रकृति प्रेमियों को अपनी ओर आकर्षित करते रहते हैं। भारत के कुछ प्रसिद्ध बाग जिन्हें देख कर मन बाग बाग हो उठता है—

वृन्दावन गार्डन

कर्नाटक राज्य के मैसूर शहर से लगभग 19 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है वृन्दावन गार्डन। यह खूबसूरत गार्डन कावेरी नदी पर बने कृष्णराज सागर बांध के नीचे है। इस बाग की नींव 1927 में रखी गयी थी और इसका निर्माण कार्य 1932 में पूरा हुआ था। यह 20 एकड़ के क्षेत्र में फैला हुआ है। इस बाग की सजावट नृत्य करते फव्वारों और फूलों से की गयी है। यह बाग फ़िल्मों की शूटिंग के लिए काफी मशहूर है। मैसूर शहर में आने वाला प्रत्येक यात्री इस प्रसिद्ध वृन्दावन गार्डन देखना चाहता है। इस बाग में फव्वारों का जल प्रपात, पक्षियों का कलरव और आकर्षक फूलों की मनमोहक क्यारियां देखते ही बनती हैं।

वृन्दावन गार्डन तीन छतों में बना है जिसमें पानी के फ़व्वारे, पेड़, बेलबूटे और फूलों के पौधे शामिल हैं। इस गार्डन का विशेष आकर्षण 'म्यूजिकल फाउन्टेन्स' में संगीत की लहरी पर झूमते-नाचते पानी के फव्वारों का एक छोटा-सा शो होता है जो मन को अपनी ओर अनायास खिच लेता है।



इस विशाल बाग में नौका विहार का आनंद भी उठाया जा सकता है। शाम होने के बाद वृन्दावन गार्डन में लयबद्ध तरीके से जलती-बुझती रोशनी और संगीत पर पानी के फव्वारों का नृत्य देखने के लिए भीड़ जुटती है। जिस प्रकार शाम रात की ओर बदलने लगती है, वाद्य यंत्रों की धुन पर पानी के रंग-बिरंगे फ़व्वारे जीवंत हो लगते हैं। यह नज़ारा इतना अद्भुत होता है कि मानो पर्यटक परियों के देश में पहुँच गए हों। यह उद्यान सामान्य जनता के लिये निःशुल्क खुला रहता है। परंतु कुछ के शुल्क भी लगता है।

सिम पार्क—

तमिलनाडु के हिल स्टेशन कुन्नूर का सबसे बड़ा पहचान है यह पार्क। यह 12 हेक्टेयर में बना है। इसे एक अंग्रेज़ मेजर मर्रे और मि.जे.डी. मर्रे सिम ने सन् 1874 में बनवाया था। सिम पार्क में 1000 विदेशी पेड़-पौधे हैं। फर्न्स, पाइन्स, मंगोलिया और कामेलिया जैसे पुराने और कम पाए जाने वाले पेड़ यहां देखने को मिलते हैं। कुन्नूर का यह प्राकृतिक गार्डन है। इस पार्क में हर साल फ्रूट शो होता है। फलों को आकर्षक तरीके से काटकर उसकी प्रदर्शनी लगायी जाती है।

जवाहरलाल नेहरू गार्डन —

सिक्किम के गंगटोक शहर से 24 किलोमीटर दूर जवाहरलाल नेहरू गार्डन पर्यटकों के लिए बेहद ही प्रसिद्ध है। इस बाग को 1987 में बनाया गया था, जिसकी देखरेख राज्य का वन विभाग करता है। प्राकृतिक सुंदरता और लुप्त होते पेड़ों को देखने के लिए यह जगह काफी अच्छी है। यहां पर वैसे पेड़ों की कई प्रजातियां देखने को मिल सकती हैं, जो अब लुप्त होती जा रही हैं। हिमालय की पर्वत श्रृंखला से पौधों की कई प्रजातियां यहां पर लाकर लगाई गई हैं। यहां पर आपको 50 से भी अधिक अलग तरह के जड़ी बूटियों के पेड़ व पौधे देखे जा सकते हैं। यह पार्क बच्चों के मनोरंजन और पिकनिक स्पॉट के रूप में काफी लोकप्रिय है।

गुलाब बाग —

इस बाग को सज्जन निवास के नाम से भी जाना जाता है। यह उदयपुर का सबसे सुंदर और बड़ा बाग है। इसे महाराणा सज्जन सिंह ने 100 एकड़ जमीन पर बनवाया था। यह राजस्थान का सबसे बड़ा गुलाब के फूलों का बाग है।

गुलाब के फूलों की वजह से इस बाग का नाम गुलाब बाग रखा गया है। यह गार्डन पिछोला झील की दाईं तरफ



स्थित है। इस गार्डन में पर्यटकों को गुलाब के फूल की ऐसी किस्में देखने को मिलती है जिसे काफी दुर्लभ माना जाता है। इस बाग की गिनती विश्व के खूबसूरत बागों में होती है। प्राकृतिक सुंदरता पसंद लोगों को इस बाग के गुलाब बरबस अपनी ओर आकर्षित करते हैं। इस गार्डन में सरस्वती भवन नाम से एक पुस्तकालय भी है। इस बाग में घूमने के साथ पर्यटक ट्रॉय ट्रेन से सैर भी कर सकते हैं और हिरण, मोर, नील गाय, बंदर, खरगोश आदि जानवरों को भी देख सकते हैं।

बोटैनिकल गार्डन —

यूं तो कोलकाता शहर की पहचान रसगुल्ले और मिष्टी दही और मछली से होती है लेकिन प्रकृति प्रेमियों के लिए यह शहर पुराने घने वृक्षों के साये तले गुम हो जाने के लिए भी जाना जाता है। बोटैनिकल गार्डन कोलकाता के हावड़ा जिले के शिबपुर में स्थित है। यह ऑर्चिड, पाम, बैम्बूज एंड प्लांट्स ऑफ द पाइन जीनस के लिए प्रसिद्ध है। यह बाग हुगली नदी के किनारे 270 एकड़ में बना हुआ है, जहां 1700 अलग-अलग तरह के पेड़-पौधे लगाए गए हैं।

बोटैनिकल गार्डन ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा 1787 में बढ़ती वाणिज्यिक गतिविधियों और बाजार को देखते हुए बनाया गया था। इसके अलावा, यहां का बर्ड हाउस आकर्षण का केंद्र है। इस गार्डन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यहाँ पर विश्व का सबसे चौड़ा बरगद का पेड़ है 144400 वर्ग मीटर में फैला हुआ है। इस बरगद के पेड़ को देखने के लिए दूर दूर से सैलानी आते हैं। शीत ऋतु में यहां के पेड़ों पर विभिन्न प्रजातियों के प्रवासी पक्षियों का बसेरा होता है। सैलानी इन पक्षियों को अपने कैमरे में कैद करने के लिए आतुर दिखते हैं।

इसके अलावा कोलकाता और दिल्ली में कुछ नये बाग भी बनाए गए हैं जैसे दिल्ली में लोदी गार्डन और बुद्ध गार्डन तथा कोलकाता के मैदान के पास एक छोटा पार्क बना हुआ जो देखने में काफी खूबसूरत एवं मनमोहक है।

— विकास कुमार त्रिपाठी

दुश्मन का भी करो सम्मान

प्राचीन काल में भारतवर्ष में भानुप्रताप नामक एक राजा थे। वह बहुत ही धर्म निष्ठा एवं कर्तव्य निष्ठा राजा थे। उन के शासनकाल में प्रजा बहुत ही खुशहाल जीवन व्यतीत कर रही थी। राजा भानुप्रताप अपनी प्रजा को अपना परिवार मानते थे और स्वयं को प्रजा का सेवक समझते थे। प्रजा भी राजा को अपने प्राणों से अधिक प्यार करती थी। पूरे राज्य में सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा था, तभी एक दिन राजा भानुप्रताप के राजमहल में साधु पहुंचे। उन्होंने राजा से मिलने की इच्छा जाहिर की।

द्वारपाल ने राजा को सूचना दिया तो राजा बहुत प्रसन्न हुए और साधु का बहुत ही आदर के साथ राजमहल में सम्मान किया। राजा ने उसे याद करने का कारण पूछा। साधु ने बड़े ही गंभीर भाव से राजा से कहा- हे राजन आप के संरक्षण में पूरा राज्य बहुत ही समृद्धि एवं खुशहाल है। हम ऋषि महात्मा बड़े ही आराम से यज्ञ तप कर रहे हैं। हम लोग भी बहुत ही खुश है लेकिन आने वाला भविष्य काल अच्छा नहीं लग रहा है। अतः अपना धर्म एवं कर्तव्य पूरा करने के लिए मैं आपके पास एक सूचना लेकर आया हूं। राजा भानुप्रताप विस्मित भाव से बोले — हे महात्मा, निसंकोच होकर अपनी बात बताएं। मेरा दिल उस अनिष्ट काल को सुनकर यथाशीघ्र उस समस्या को दूर करने के लिए व्याकुल हो रहा है।

साधु ने राजा से कहा- हे राजन आप अपना भय एवं व्याकुलता को छोड़कर शांति एवं धीरज पूर्वक हमारी बात सुनिए आपकी जन्मकुंडली हमारे द्वारा बनाई गई है। आपके पिताजी को मैंने जन्मकुंडली के गुण दोष के बारे में भली भांति बता दिया था। मैं लंबे समय से समाधि में बैठा था लेकिन आज मुझे एहसास हुआ उसके फलस्वरूप मेरी समाधि अचानक भंग हो गई और मैं व्याकुल होकर आपके पास आ पहुंचा हूं लेकिन अब व्याकुल और उत्तेजित होने का बिल्कुल समय नहीं है बल्कि शांति धीरज और बुद्धिमत्ता पूर्वक सब कुछ ईश्वर को साक्षी मानते हुए अपने कर्तव्य का पालन करें।

मैं आपको बताना चाहता हूं कि जो घटना राजा परीक्षित के साथ अंत समय में घटी थी वहीं घटना आपके साथ घटने वाली है। राजा परीक्षित को तो सात दिन का समय मिला था और उन्होंने श्रीमद्भगवत् ग्रंथ के सानिध्य में मुक्ति प्राप्त कर ली थी लेकिन आपके पास केवल तीन ही दिन शेष बचे हैं। तीसरे दिन सांप के काटने से आपकी मृत्यु हो जाएगी, यदि ऐसा हुआ तो आपको नरक लोक में जाना पड़ेगा।

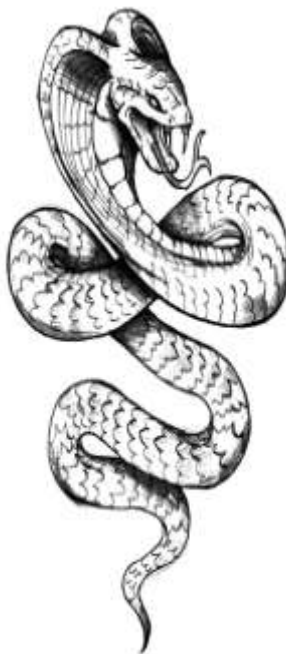
राजा भानुप्रताप भावुक होकर उस महात्मा जी से अपने उद्धार होने का उपाय पूछने लगे। तब महात्मा जी बोले- हे राजन कहावत है कि प्रयास करने वालों की कभी हार नहीं होती है विजय जीवन के आखिरी क्षण में भी मिल सकती है, यदि सच्चे मन से एवं तन्मयता से प्रयास किया जाए तो।

हमारी सलाह है कि आप के महल में चारों तरफ से आने वाले रास्तों में फूल बिछा दिया जाए। जगह जगह कड़ाहों में मीठा मीठा दूध भरा दिया जाए, जगह-जगह कड़ाहों में जल भरवा दिया जाए एवं जगह-जगह रास्तों में नाग देवता को खाने के लिए फल एवं अन्न की व्यवस्था कर दी जाए। महल के चारों तरफ से सुरक्षा व्यवस्था हटा दिया जाए जिससे नाग देवता का अपना कर्तव्य पूरा करने में कोई व्यावधान ना आए क्योंकि यह जीवन तो नाश्वान है परंतु जीवात्मा अजर अविनाशी। इस बात को समझ कर आपके पास जो भी समय शेष है उसे ईश्वर के ध्यान में लगा दीजिए।

राजा भानुप्रताप भी एक धर्मात्मा राजा थे। उन्होंने साधु के बताए गए उपायों का अक्षररशः पालन किया। नाग देवता ने जब राजा भानुप्रताप के राज्य की सीमा में प्रवेश किया तो उनके रास्तों में फूल बिछाए गए थे उन्हें लगा कि राजा भानुप्रताप उनका सम्मान कर रहे हैं। आगे बढ़ने पर स्वागतार्थ मीठे मीठे दूध पीने को मिले, और आगे बढ़ने पर पानी से भरे बड़े-बड़े कड़ाहे मिले।

उसमें पानी पीकर अपनी प्यास बुझाई। फल खाया, अन्न खाया। रास्तों के ऊपर तंबू लगाए गए थे, प्रकाश व पंखों की व्यवस्था की गई थी। राजा के सारे इंतजामों का आनंद उठाते हुए नागदेवता राजमहल के द्वार पर पहुंचे तो राजमहल में नाग देवता को रोकने वाला कोई प्रहरी अथवा सुरक्षाकर्मी नहीं नजर आया।

नाग देवता बहुत आराम से आपका क्या विचार है? राजा भानु प्रताप ने हाथ जोड़कर कहा- हे नाग देवता आपको हमारे पास पहुंचने में यदि हमारे द्वारा किये गये उपायों में कुछ कमी रह गई हो तो मुझे माफ कर दीजिएगा। बाकी जिस प्रयोजन के लिए आप पधारे हैं उस काम को प्रसन्नतापूर्वक पूरा कीजिए इसके लिए मैं सदा आपका आभारी रहूंगा।



नाग देवता भानु प्रताप की बात को सुनकर गदगद हो गए और बोले- हे राजन् आपकी आयु आज क्षीण हो रही है, लेकिन मेरे विचार से आपको भी सौ साल और इस धरती पर रहना चाहिए। मैं विधि का विधान तो नहीं बदल सकता परंतु मैं जिस काम के लिए आया हूं उसे पूरा करूंगा ही, परंतु मैं आपका आशीर्वाद देता हूं कि अपनी आयु के पांच दिन आप को प्रदान करता हूं जो कि आपके पृथ्वी लोक में मेरी आयु के पांच दिन अर्थात् (नाग लोक का 5 दिन पृथ्वी के सौ वर्ष) के बराबर होगा। अर्थात् 100 वर्ष का जीवन दान आपको दे रहा हूं। आप इस समय का सदुपयोग कीजिएगा। नाग देवता राजा भानु प्रताप का शरीर को हल्का सा स्पर्श करके अपना काम पूर्ण किये और अपने धाम को चले गए। राजा भानुप्रताप नाग देवता के प्रभाव से बेहोश हो गए, जिसका उपचार करने पर वह पुनर्जीवित हो गए तथा अगले सौ वर्षों तक निष्कण्टक होकर राज किया। इस कहानी के अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि यदि हम प्रेम, सम्मान एवं आदर के साथ शत्रुओं से व्यवहार करना शुरू कर दें तो एक दिन शत्रु भी मित्र में परिवर्तित हो जाएगा।

— चन्द्रभान



गौरैया का परिवार

मैं अपनी पत्नी एवं चार बच्चों के साथ रेलवे के क्वार्टर में निवास करता हूँ। मेरे क्वार्टर में ठीक दरवाजे के ऊपर उजाल दान में एक और जुगल निवास करता था। एक गौरैया एवं गौरा मेरी ही तरह अपने परिवार के भरण-पोषण का संपूर्ण दायित्व निभाते हैं। सुबह शाम जब मेरी नजर इस परिसर में उस युगल को देखती थी तो मेरे मन में करुणा उमड़ आती थी और मैं कुछ चावल- दाल या फिर रोटी के टुकड़े प्रतिदिन इस गौरा के परिवार के लिए मकान के बरामदे या खिड़की की दहलीज पर रख देता था। इस प्रकार जब कभी मैं बाहर निकलता तब कुछ कुत्ते एवं गौरियों का समूह मेरी प्रतीक्षा करता कि मैं उनके लिए खाने के लिए कुछ लेकर पहुंचूँ। एक कौवा तो इस प्रकार मेरे परिवार का हिस्सा बन गया था कि जब तक उसको मैं दो मेरी गोल्ड बिस्कुट नहीं दूँ वह खिड़की पर कांव कांव करता ही रहता।

मेरे बच्चे एवं पत्नी मुझसे कहते कि जाओ अपने कौवे को कुछ जल्दी से दे दो अन्यथा यह हमारा जीना हराम कर देगा। जब तक कौवे की मनोकामना पूरी नहीं होती थी वह कांव-कांव करता ही रहता था। इस प्रकार गौरा का परिवार मेरे परिवार का पालतू अंग बन गया था। कौवे को प्रतिदिन भोजन ग्रहण करना हमारे परिवार के जीवन का अंग बन गया था। जैसे-जैसे समय व्यतीत हुआ गौरा एवं गौरैया ने युगल बच्चों को जन्म दिया। रात दिन दोनों बच्चों की देखभाल करते रहते थे। पर बच्चे अपने माता पिता को भोजन के लिए उठाते ही रहते थे। ऐसा प्रतीत होता था जैसे कि वे बहुत भूखे हों। यहां तक कि जब भी कभी बरामदे की लाइट जलती गौरैया रात में भी कुछ भोजन अपने बच्चों के भरण पोषण के लिए व्यवस्था करती रहती एवं अपनी जान की बाजी लगाकर कभी कभी वह कीड़े मकोड़े तितलियों को अपनी चोच में पकड़कर बच्चों को खिलाती। जब बच्चों की भूख शांत हो जाती तब वह आराम करने लगती।

इस प्रकार यह सिलसिला कई दिनों तक चलता रहा। मैं भी ध्यान रखता था कि कहीं बच्चे भूखे तो नहीं हैं। मैं प्रतिदिन सुबह-शाम चावल के कुछ दाने मेरे मकान के प्रांगण में डाल देता था जिसके लिए मुझे अपनी पत्नी की डांट भी सुननी पड़ती थी कि हमेशा घर को गंदा करते रहते हो। मैं कहता था कि देखो माया जी धारिया यह मकान हमारा नहीं है और ना ही यह शरीर हमारा है तो आप छोटी छोटी बातों के लिए अनावश्यक रूप से क्यों गुस्सा करती रहती हैं। कई बार हम दोनों पति पत्नी के बीच में गौरैया एवं गौरा के बच्चों के लिए लंबी लंबी बहस भी छिड़ जाती थी। मैं दार्शनिक बातें करके अपनी पत्नी को समझाने की कोशिश करता था-- कभी भी किसी वस्तु से इतना लगाव मत रखो क्योंकि वह अपना जीवन कठिन कर सकता है। ऐसा करना किसी के लिए भी खराब होता है। शांति से जीवन जीने के लिए अपने कर्तव्य का पालन करना होगा।

एक दिन संध्या को कुछ ऐसा घटित हुआ कि मेरी रात दुख में बदल गई। गौरैया के दोनों बच्चे चीची कर रहे थे। उसकी मां को लगा होगा कि बच्चे भूख से परेशान हैं और वे चींची कर रहे हैं। वह अपने घोंसले से बाहर निकली और अपने बच्चों के लिए भोजन बटोर कर लाने लगी। लेकिन मुझे क्या पता था कि मेरे कमरे में चल रहा पंखा इस गौरैया के लिए कालरात्रि बन जाएगा। ट्यूबलाइट के प्रकाश में जैसे ही उसने एक तितली पकड़ी एवं जल्दी से बच्चों के पास पहुंचाना चाहा तो सीधे चल रहे पंखे से जा टकराई एवं उसके सिर पर गहरी चोट लगी। वह घायल होकर जमीन पर गिर गई। मैं देखता ही रह गया और। मन में सोचा हे परमात्मा क्या तुझे ऐसा ही स्वीकार था।

गौरैया के बच्चे चीची करना बंद नहीं कर रहे थे। पर उन मासूमों को क्या पता था कि उनकी मां अब उनके लिए कभी भोजन लेकर नहीं आएगी। मैं क्या करूँ अत्यंत बेचैन हो गया। बच्चे चिर्ची करना बंद नहीं कर रहे थे। इधर मां के

शव को धीरे धीरे उठाया और देखा कि कहीं काश यह फिर से जीवित हो जाए। बच्चों को भोजन खिला सके। पर तकदीर को यह स्वीकार नहीं था।

गौरैया जैसे ही गिरी मैंने कुछ पानी की बूंदे उसके मुंह में डाला मगर वह फिर भी जीवित न हो सकी। अब बच्चों को जीवित कैसे रखा जाए। मैं बहुत ही दुख के साथ उसके शव के पास गया एवं एक वृक्ष के नीचे छोड़ आया। गौरैया के बच्चों की परवरिश मेरे कंधों पर आ गई थी। इधर गौरा स्वयं भी बहुत उदास एवं मौन रहता था। वह कभी मेरी खिड़की की दहलीज पर बहुत ही उदास मन से कई दिनों तक बैठा रहा। मेरे मन में एक ही ख्याल था कि बच्चों को किस प्रकार से जीवित रखा जाए। बच्चे इतने छोटे थे कि मैं चाह कर भी मैं उन्हें भोजन नहीं दे सकता था।



क्या किया जाए यह दुख मुझसे नहीं देखा जा रहा था। मैंने चावल के छोटे छोटे टुकड़ों को धीरे-धीरे चीची करते हुए बच्चों के मुंह में डालने की कोशिश कि जैसे ही मैंने चावल के छोटे छोटे टुकड़े बच्चे के मुंह में फेंके तो बच्चों ने अचानक अपना मुंह खोल दिया। शायद उन्हें लगा कि उनकी मां ही उनके लिए भोजन लेकर वापस आ गई हो। बच्चों की अभिलाषा देख कर मेरा हृदय दुख से भर गया एवं मेरी आंखों से आंसू बहने लगा और परमात्मा से कहा कि हे ईश्वर, यह तेरी कैसी लीला है कि इन मासूमों से इनका सहारा बचपन में ही छीन लिया। मैंने धीरे धीरे बच्चों के मुंह में चावल के कुछ दाने डाले।

बच्चों के चावल खा लेने से मुझे बहुत संतोष मिला। अगले दिन मैंने बच्चों के घोंसले से बाहर निकाल लिया एवं उनकी देखभाल करने लगा। सुबह-शाम उन्हें भोजन पानी देता है एवं आशा करता कि ये बच्चे किसी प्रकार बड़े हो जाएं। जैसा कि किस्मत को मंजूर था बच्चे धीरे-धीरे बड़े होते गए।

पर एक दिन एक बच्चा किसी ऊंचाई से उड़ा एवं गिर गया। उसके पंख घायल हो गए।

यह घटना भी मेरे लिए बहुत अधिक दुखदाई सिद्ध हुई। एक दिन एक स्वस्थ बच्चा मेरे बेटे की साइकिल से टकरा गया और उसकी दुर्घटना में मौत हो गई। इसके लिए मैंने अपने बच्चे को इतना डांटा कि 15 दिनों तक वह घर में ठीक से भोजन नहीं कर पाया। इधर घायल बच्चा अकेला पड़ गया था।

मेरे अनेक प्रयास के बाद भी वह बच्चा पालतू नहीं बन सका। मैंने उसे खाना पानी समय-समय पर दिया। एक दिन मैंने उसे अपने हाथ में उठाया और किचन की खिड़की के तार के ऊपर बैठा दिया। अचानक उसने उड़ान भरी और वह बाहर के वृक्ष की डाली पर जाकर बैठ गया तब मुझे ऐसा लगा कि मेरी जवाबदेही से मुझे मुक्ति मिल गई। गौरैया के परिवार का एक सदस्य अगले परिवार को आगे बढ़ाने के लिए, जिंदगी में कुछ पाने के लिए बाहर चला गया। फिर वह मुझसे कभी नहीं मिला।

— कैलाश चंद्र धारिया

मोबाइल के अनजाने पहलू

आज के समय में मोबाइल हर किसी की जिन्दगी का एक महत्वपूर्ण अंग बन चुका है। मोबाइल तो सभी इस्तेमाल करते हैं क्या आपको पता है मोबाइल फ़ोन के कुछ ऐसे तथ्य हैं जिनको जानकार आप दंग रह जायेंगे। चलिए जानते हैं मोबाइल के बारे में कुछ दिलचस्प जानकारी—

- ⇒ मोबाइल फ़ोन के द्वारा सबसे पहली कॉल मार्टिन कूपर के द्वारा 3 अप्रैल 1973 में की गई थी। यो मोटोरोला कंपनी के कर्मचारी थे।
- ⇒ सन 1983 में पहला मोबाइल फ़ोन बनाया गया था जो अमेरिका में बना था जिसकी कीमत 2.5 लाख रूपए रखी गई थी। यह मोटोरोला कंपनी का मोबाइल था।
- ⇒ जापान में 90 प्रतिशत लोग वाटरप्रूफ मोबाइल का इस्तेमाल करते हैं क्योंकि जापान में लोग नहाते समय भी मोबाइल का इस्तेमाल करते हैं।
- ⇒ आपको यह जानकार हैरानी होगी के 70 प्रतिशत मोबाइल चार्जिंग में बनाए जाते हैं।
- ⇒ दुनिया में 49 प्रतिशत लोग अपना मोबाइल गेम्स खेलने के लिए इस्तेमाल करते हैं और 30 प्रतिशत लोग नेटवर्किंग के लिए इस्तेमाल करते हैं।
- ⇒ भारत में टॉयलेट से ज्यादा मोबाइल फ़ोन हैं।
- ⇒ नोकिया का 1100 मोबाइल फ़ोन अब तक का सबसे ज्यादा बिकने वाला मोबाइल रहा है इस मोबाइल की बिक्री 250 मिलियन से भी ज्यादा हुई थी। मोबाइल की हिस्ट्री में यह एक रिकॉर्ड रहा है।
- ⇒ वर्ष 2012 में संसार की सबसे बड़ी कंपनी एप्पल ने 1 सेकंड में 4 मोबाइल बेचे थे यानि के प्रतिदिन 34,0000 मोबाइल बेचे गए।
- ⇒ औसतन एक व्यक्ति हर रोज अपना मोबाइल 100 से अधिक बार अनलाक करता है।
- ⇒ अब तक का सबसे ज्यादा मोबाइल का बिल 142, 000 पौंड आया था यानि के 1 करोड़ 36 लाख से कुछ ज्यादा यह बिल सेलिना आरोंस को आया था यो फ्लोरिडा की रहने वाली थी।
- ⇒ यह पढ़कर आपको हैरानी होगी के ब्रिटेन में हर वर्ष 100,000 से भी अधिक मोबाइल टॉयलेट में गिर जाते हैं।
- ⇒ सोनिम एक्सपी 3300 दुनिया का सबसे मजबूत फ़ोन है जिसको 84 फीट की उंचाई से गिराने के बाद भी कुछ नहीं हुआ। यह फ़ोन गिनीज ऑफ़ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज है।
- ⇒ मोबाइल फ़ोन से पहला मैसेज नील पोप्वोर्थ ने भेजा था जिसमे लिखा था Merry Christmas।
- ⇒ दुनिया में फ़ोन इस्तेमाल करने वालों में से 90 % लोग अपने मोबाइल पर आए टेक्स्ट मैसेज को 3 मिनट के अंदर पढ़ लेते हैं।
- ⇒ आपको यह जानकार हैरानी होगी के संसार के 4 विलियन लोगों के पास खुद का मोबाइल है परन्तु 3.5 लोगों के पास टूथ ब्रश नहीं है।

— कुमारी ऋचा

बिना पूंजी का धंधा

धंधा का मतलब है रोजगार अर्थात् अर्थोपार्जन हेतु किया गया काम और इसको ही धंधा कहते हैं। जिनकी आय फिक्स है, जो नौकरी करते हैं — वह धंधा की श्रेणी में नहीं आता है और जिनका काम बड़े पैमाने पर आ चुका है वह कारोबार है, उसे भी धंधा नहीं कहा जा सकता। छोटे-मोटे कारोबार को ही धंधा कहते हैं, जैसे फेरीवाला, खोमचा वाला ठेला पर सब्जी बेचने वाला आदि धंधा कहलाता है। इसमें अल्प पूंजी लगती है और गरीब, बेरोजगार व्यक्ति किसी प्रकार अपने परिवार का भरण पोषण कर लेता है।

मैं एक नए धंधे का वर्णन करना चाहूंगा — यह समाज में काफी फल-फूल रहा है। यह धंधा सदियों पहले धंधा की श्रेणी में नहीं आता था। आजकल यह धंधा का स्वरूप अपना लिया है और इस धंधे में तमाम किस्म के लोग या विभिन्न जाति के लोग अपनी किस्मत आजमा रहे हैं। पहले यह धंधा सिर्फ पुरोहित ब्राह्मण तथा नाई करते थे। व्यक्ति जिसके पास कोई कार्य नहीं है उसने इसमें पैठ बनाना शुरू किया है और आज तो तमाम नवयुवक से लेकर वृद्ध तथा औरतों ने भी इसी धंधा को अपना लिए हैं। मजे की बात है कि दुनिया में किसी भी प्रकार के धंधे में पूंजी कम या बेसी लगानी ही पड़ती है इसके बावजूद कभी-कभी मेहनत करने के बाद भी नुकसान हो जाता है। परंतु इस धंधे में जिसकी मैं व्याख्या कर रहा हूं इसमें घाटा यानी नुकसान होने का कोई चांस नहीं है, न ही पूंजी लगाने की आवश्यकता ही पड़ती है, न कभी स्थिर होकर एक स्थान पर बैठना ही पड़ता है।

बस थोड़ी चिकनी लुभावनी बातें करने की कला जाननी होगी यानी गपबाजी करना। इससे आपको तुरंत नाश्ता चाय मिल जाएगी और फिर सब्जबाग दिखलाते ही गांधी छाप वाला असली नोट भी आपको जजमान झटके से थमा देगा। काम की कोई गारंटी -वारंटी नहीं, बस सब कुछ विश्वास पर, राम भरोसे यह धंधा समाज में फल-फूल रहा है। जो भी इस धंधे में हैं, चाहे वह किसी जाति के क्यों न हो, अपने को पंडित जी कहलाना पसंद करते हैं। कई दफा मैं भी इस घनचक्कर में पड़ चुका हूं। एक सज्जन एक महिला के साथ पधारे और मुझसे पूछा — सुना है, आपको अपनी कन्या हेतु किसी अच्छे घर की तलाश है। मैंने कहा — सच सुना है। घबराइए मत मैं आपकी बेटी हेतु एक से बढ़कर एक लड़का यानी अच्छे से अच्छा लड़का बतलाता हूं और अपनी झोली से एक डायरी जिसमें कुछ लड़के लड़कियों के फोटो और बायोडाटा था दिखाते हुए कहा — पसंद कीजिए। और सब का वर्णन करने लगे।

यह लड़का बैंक में नौकरी करता है। आप इस लड़के को अगर पसंद करेंगे तो हम उसको दिखलाने ले जाएंगे। इतनी सुंदर मनमोहक बातें सुनते ही श्रीमती जी गरमागरम चाय- बिस्कुट तथा नाश्ता ले आईं। धंधेबाज ने डट कर नाश्ता तथा चाय का मजा लिया और जाते-जाते कहा — मास्टरजी लड़के के घर पर जाना होगा, बातचीत करनी होगी। अब तो अपनी लड़की का फोटो और बायोडाटा दे दीजिए, अपना मोबाइल नंबर भी लिख दीजिए। मैंने वैसा ही किया। फोटो बायोडाटा पाते ही याचक की भांति मेरा मुंह ताकने लगे और कहा — सर, मैं आपकी तरह रेल में नौकरी नहीं करता। जाने के लिए रेल का टिकट कटाना होता है तथा चाय पान का भी खर्च है तो कुछ बोहनी कीजिए। सुबह-सुबह आपके पास ही आया हूं। मैंने भी उचित समझा और 100 रु का एक ताजा नोट थमाया। फिर मुंह बिचकाते उसने कहा — सर, 100 में क्या होता है, कम से कम 100 और दीजिए। फिर मैंने 50 रुपये दिये, तब जाकर पंडित जी संतुष्ट हुए।

कई दिनों के बाद मैंने संपर्क साधा तो पंडित जी ने बताया कि क्या बताऊं मास्टर जी, काफी दिनों से संपर्क में नहीं था तो बैंक वाले लड़के की शादी हो गई। ड्राइवर का भी छेका होने वाला है। एक लड़का है वह भी प्राइवेट टीचर है

और एक इंजीनियर प्राइवेट कंपनी में है। कहिए तो बात चलाऊं। मेरे पास एक से बढ़कर एक बिजनेसमैन हैं। अगर आप बोलिए तो मैं उससे संपर्क करूं। मैंने कुछ नहीं कहा। हां, पत्नी महोदया ने कहा — नहीं पंडित जी, मेरे खानदान में एक से बढ़कर एक नौकरी करने वाले हैं।

मेरी मां भी टीचर थी तो नौकरी वाला लड़का ही खोजिए। पंडित जी जाते-जाते अपना विजिटिंग कार्ड दे दिये थे। उस पर पंडित जी तथा उस महिला का नाम, फोन नंबर के साथ उसका पता भी लिखा था। काफी दिनों तक जब पंडित जी से कोई शुभ समाचार नहीं मिला तो मैं एक दिन पहुंच गया पंडित जी की खोज में। पंडित जी के कार्ड पर जगदल स्टेशन के पास का ही पता था सो पूछते पूछते पहुंचा और एक मोदी खाना की दुकान पर जाकर दुकानदार को उनका दिया कार्ड दिखलाया। दुकानदार ने कहा — चाचा यह आदमी फ्रॉड है, काहे कि कल एक औरत भी उसे खोजत खोजत यहां आयल रहे। यह आदमी यहां नहीं रहता है। अब तक मेरे पास 8 से 10 नकली पंडित जी आ चुके हैं, सब्जबाग दिखला कर कोई डेढ़ सौ रुपए तो कोई 200 कोई 300 ले गए हैं। कुछ पंडित जी लड़के दिखलाए भी हैं। उस वक्त फिर रुपये लिए हैं और यदि लड़के पार्टी आए तो भी 200 की मांग की है।

नाश्ता-पानी मिठाई ऊपर से फ्री। इस धंधा में सब के सब फ्रॉड ही जुट गए हैं। खासकर बंद जूट मिल के कमजोर श्रमिक जिससे अन्य कोई कार्य नहीं हो पाता है वे लोग इस धंधा में अपनी किस्मत आजमाने लगी हैं। अब तक मैं आए 8 से 10 पंडितों में से सब के सब काम कांकिनारा और जगदल के ही लोग थे। इन का उद्देश्य शादी विवाह कराना न होकर अधिक से अधिक लड़के पार्टी का ब्योरा देकर रुपया लेने का रहता है। सभी पंडितों का मैंने बाद में खोज खबर लिया कोई तेली, तो कोई सुनार, कोई कानू परंतु सब के सब अपने को पंडित जी ही बतलाते थे। तब मुझे ज्ञात हुआ कि जो भी इस धंधे में है सब अपने को पंडित जी कहलाना पसंद करते हैं। पंडित जी कहलाने से थोड़ा आदर-सत्कार ज्यादा मिलता है।

कुछ पंडित जी तो पैसे लेकर ऐसे गायब हुए जैसे गधे के सर से सिंग। परंतु क्या करें कोई चारा नहीं था। इस भरोसे से पंडित जी के चक्कर में पड़ना ही पड़ता था कि शायद बात बन जाए। अपने राम को समय कहां इधर-उधर घूमने, पता लगाने का होता क्योंकि एक पैर मालदा में तो दूसरा हालीशहर में और 50 प्रतिशत शरीर रेलगाड़ी में। क्या करें, इसीलिए मैं भी इसी धंधे में अपनी किस्मत आजमाने को सोच रहा हूं अर्थात् भोलेनटीयर रिटायरमेंट लेने की सोच रहा हूं। 33 साल नौकरी तो हो ही गई है पूरा बेनिफिट तो मिलेगा ही पर पेंशन तो आधा ही मिलेगा तो उसे इस धंधे से पूरा कर लिया जाएगा। 4 घर भी यदि प्रतिदिन जाया जाए और सब से 200 रुपये ही वसूल किया जाए तो प्रतिदिन 800 की कमाई होगी और ऊपर से नाश्ता खाना फ्री। इस प्रकार महीना में 24000 तो हो ही जाएंगे तो क्यों ना इसी धंधे में अपनी किस्मत आजमाई जाए

मालदा सियालदह के चक्कर में अधिकारी को बेवजह तेल क्यों लगाऊं। क्योंकि आजकल तेल भी बहुत महंगा हो गया है। नकली तेल लगाने से साहब बिगड़ जाएंगे। काम बनाने के लिए खुशबूदार तेल चाहिए और खुशबूदार तेल खरीदने के लिए पाकेट ढीली करनी होगी। तो ही काम सफलीभूत होगा, साहब प्रसन्न होंगे ही या और कुछ चाहेंगे पता नहीं। सो इस संशय में रहने से लाख गुना अच्छा है कि इसी धंधे में अपनी किस्मत आजमाई जाए क्योंकि यहां नुकसान की बात नहीं और नहीं पूंजी गवाने की आवश्यकता है। कितनों से ठगे जाने के बाद इस धंधे की सभी बातें, बारीकियां समझने लगा हूं।

यदि धंधा में थोड़ी भी ईमानदारी बरती जाए तो चांदी ही चांदी। क्यों न मैं भी इसी धंधे में ईमानदारी के साथ जुड़ जाऊं और एक मुकाम हासिल करूं। इस धंधे का मैं खुद मैनेजिंग डायरेक्टर रहूंगा और किसी बंदे को तेल लगाने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

वाह रे धंधा तू भी क्या याद करेगा कि इस धंधा में जान लाने के लिए इसे प्रतिष्ठा मूलक धंधा बनाने के लिए कोई रेल की नौकरी छोड़ कर इस में किस्मत आजमाने को सोच रहा है। धंधा भी फूला नहीं समाएगा क्योंकि धंधे की प्रतिष्ठा बढ़ेगी और धंधा एक मुकाम हासिल करेगा। इस धंधे में शामिल महानुभावों को भूल से भी यदि दलाल कह देंगे तो तुरंत उखड़ जायेंगे और कहेंगे — मैं पहले लड़के लड़की की शादी तय करवाता हूं तभी ब्राह्मण शादी करवाता है। ब्राह्मण लड़के लड़की की खोज तो नहीं करता, खोज हम लोग के बिरादरी के लोग ही करते हैं तो हम लोग पहले ब्राह्मण यानी पंडित जी हैं और दूसरे स्थान पर ब्राह्मण आते हैं इसीलिए हम लोग अपने को पंडित कहलाना उचित समझते हैं। इसमें किसी को क्या परेशानी है बताइए।

यह तो हुई दलाल पंडित जी की कहानी। पूजा पाठ करवाने वाले पंडित ज्योतिषी भी पीछे नहीं है। जहां भी गए कन्या का ग्रह दोष बतलाया कोई ताबीज गढ़ा या कोई अन्य विधि-विधान बता कर पाकेट ढीली करने में कोई कसर न छोड़ी जो भी सज्जन मिलते कुछ भी कीमती सलाह देते उनके कथनानुसार यदि कर्मकांड न करें तो कहेगा कि बाप मां को बेटी की शादी की कोई चिंता नहीं है, कुछ उपाय बताते भी हैं तो ध्यान नहीं देते। घर में बैठाकर कुमारी बेटी से कोई पंडित माला जप पूजा पाठ करवाया और एक पंडित जी ने तो महामृत्युंजय का जाप करवाने की सलाह दी। इस सलाह के लिए मात्र 31 रुपया दिया और पूछा — अच्छा पंडित जी कितना खर्च आएगा ?

पंडित जी माथा खुजलाए और बोले, कितना आएगा अधिक से अधिक 25000। मैं बंगले झांकने लगा और कहा — पंडित जी शादी ब्याह के लिए महामृत्युंजय का जाप करवाने की बात तो आज तक मैंने कभी नहीं सुनी है। मृत्यु संकट से छुटकारा हेतु महामृत्युंजय जाप करवाया जाता है पंडित जी ने बताया कि शादी भी न हो पाना कठिन ग्रह दोष के कारण ही तो होता है। जजमान यह क्या माता पिता के लिए मृत्यु जैसा दुखदाई नहीं होता इसलिए इसे भी बहुत से लोग करवाते हैं।

कोई मूंगा तो कोई पन्ना सोने की अंगूठी में मड़वा कर पहनाने की सलाह दिए होंगे उसको भी समर्थ भर किया। परिणाम शून्य ही रहा। एक तांत्रिक महोदय ने तो घर में पूर्व की ओर बने लैट्रिन के होने के कारण शादी विवाह में बाधा होने की बात कही तो दूसरे सज्जन ने घर में छोटा सा कटहल का पौधा तुरंत उखाड़ फेंकने की मूल्यवान सलाह दे डाले।

ज्योतिषियों और पंडितों पर भरोसा इसलिए नहीं होता है क्योंकि एक दूसरों की बातों में कोई मेल नहीं होता। हर पंडित या ज्योतिषी अलग-अलग राय देते हैं जब कि $5 + 5$ का योगफल पूरे विश्व के लोग 10 ही कहेंगे। इसीलिए मैं इस पर विश्वास नहीं करता। अब मैं भोलेनाथ के शरणागत हो गया हूं, जो करेंगे अच्छा ही करेंगे। भोलेनाथ के शरणागत हुए अभी कुछ ही दिन हुए कि मेरी बेटी की शादी भी हो गई इसीलिए इसी आशा और विश्वास के साथ मैंने भी शादी विवाह कराने जैसे पुण्य काम करने को सोच रहा हूं। अब तो आप समझ ही गये होंगे कि इस धंधे में कितना फायदा और कितना असरकारक धंधा है। यदि आप बेरोजगार है तो आप भी ऐसे धंधे की शुरुआत का मन बना सकते हैं।



मां, मेरी मां



श्रद्धा के भाव से हृदय पटल, होता जहाँ सुरभित,
होती है माँ की ममता, सदियों से जहाँ पल्लवित ।
जो अधूरे हैं सारे सपने, वही साकार होते हैं,
सदव्रत माँ की चरणों में, शतवार नमन करते।

रहता है प्रफुल्लित मन सदा, माँ के साये में,
जन्नत की सारी खुशियाँ, मिलती माँ की चरणों में।
माँ की दुआओं का असर, हमने यहां देखा है,
अदावत को भुला, सबको गले हमने लगाया है ।

माँ के बिना श्रृष्टि की, कल्पना हो नहीं सकती,
माँ जैसा कोई दूजा, सहारा हो नहीं सकता ।
माँ काशी है, माँ काबा है, माँ मथुरा है, माँ कैलाश,
माँ आराधना की देवी है, चरणों में चारो धाम।

माँ संवेदना है, भावना है, माँ है पूजा की थाल,
माँ त्याग की मूरत है, माँ परमात्मा का भाल।
माँ आस्था का एक मंदिर है, प्रणिधि सदा करना,
माँ जीवन का एक सम्बल है, संजोये दिल में सदा रखना।

जीवन में कभी माँ को, नाराज न करना,
माँ जीवन की ज्योतिपूज है, आलोकित सदा रखना ।

— विजय कुमार

मेरे पिता



पिता जगत पालनकर्ता हैं
छत्र हमारे सर का ।
मान मर्यादा उनसे जुड़े हैं
बोझ उठाते धर का ॥

परम पूज्य श्रद्धेय की मुरत
शत शत नमन करूँ मैं ।
पिता स्वर्ग में कोई एक हो
स्वर्ग का सुख तजूँ मैं ॥

पग धूलि मिले सदा उनके
वन्दन करूँ चरणों की ।
साया में उनके पला बढ़ा
क्या गुणगान करूँ कर्मों की ॥

अपने सुख को त्याग हमेशा
जीवन कर न्योछावर ।
शिक्षा दीक्षा पालन पोषण में
लीन रहे जीवन भर ॥

उनके त्याग तपोबल को
है शत शत मेरा नमन ।
आशीर्वाद मिले सतत
बिताऊँ चरणों में जीवन ॥

— विनय कुमार झा

मेरे जीवन के कुछ पहलू

कदम कदम पर असफलता ही हाथ आई
फिर भी ना मैंने कभी पीछे कदम बढ़ाई
हुआ मन उदास हो कभी हताश
पर मैंने ना कभी मानी हार ना हुआ निराश ।

हर कदम पर एक नई सीख मिली
पर मैं उसे अपने जीवन में उतार न सका
टूटे सपनों और अपने विफलता को
बैठ व्यर्थ ही कोसता रहा
कभी अपने असफलता पर तो कभी
अपनी फूटी किस्मत पर हंसता रहा ।

फिर मैंने सोचा भाग्य को कोसने से क्या होगा ?
इसे सोच एक नई आशा की किरण जगी
पर यह किरण असफलता के
अंधेरे को चीर न सकी

फिर जिंदगी ने मुझे एक बार आवाज लगाई
जाग्रत हुआ मन मेरा मैंने श्मशीर उठाई
किया प्रण मैंने यह संघर्ष तब तक रहेगा जारी
जब तक जिंदगी में लग ना जाए सफलता हाथ

जिंदगी की राहों पर

अकेले ही चलना है जिंदगी की राहों पर
कोई मांझी है ना कोई मझधार है
न देगा कोई साथ यहां क्योंकि
सभी यहां अपने लिए जीते हैं ।

अकेले ही चलना है जिंदगी की राहों पर
सभी को इस जिंदगी से कुछ शिकायत है
कि यह जिंदगी तो है छोटी सी ।
मंजिल है दूर पर उसे अकेले ही जाना है ।

आज की इस भेड़चाल के दौर में
सभी एक दूसरों को गिराते हैं
शायद यही दुनिया का दस्तूर है
जिसमें प्यादे भी जंग जीत जाते हैं ।

जिंदगी एक मंच है जिसके हर एक मोड़ पर एक जंग है
जिस में कोई कभी जीतता है तो कभी हारता है
ऐसा कोई नहीं जो कभी ना हारा हो
हर हारने वाला हार कर भी जीता है
और दुनिया को सिखा जाता है

इसलिए मन को ना तुम हारने दो
मन में जीत का नया दीपक जलाओ
ना बुझने दो इस दीपक की लौ
यह लौ दिलाएगी याद तुम्हें हर वक्त
कि हार कर भी तुम्हें जीतना है हरदम ।

राहुल कुमार , पूर्व रेलवे हिंदी हाई स्कूल, साहिबगंज (कक्षा - नवम्) की दो कवितायें

मालदा मंडल द्वारा आयोजित जयशंकर प्रसाद जयंती के दौरान आयोजित विचार गोष्ठी
तथा बढ़ते कदम के विमोचन के कुछ दृश्य



मालदा मंडल के साहिबगंज रेलवे हिंदी उच्च विद्यालय में आयोजित माखनलाल चतुर्वेदी जयंती के दौरान आयोजित कविता पाठ तथा पुरस्कार वितरण के कुछ दृश्य

